# बेहतर शिक्षक वह है जिसका बच्चों के साथ मानवीय रिश्ता और जुड़ाव हो

**शिक्षिका इंदु पंवार के साथ मीमांशा की बातचीत**





**मीमांशा : नमस्ते इंदुजी, अपने बारे में कुछ बताएँ।**

इंदु : नमस्ते मीमांशा, मैं राजकीय प्राथमिक विद्यालय गिरगाँव में प्रधानाध्यापिका हूँ। मेरा जन्म पौड़ी गढ़वाल के एक क़स्बे देवप्रयाग में हुआ। बचपन से ही मुझे पढ़ने का ख़ूब शौक़ रहा। मेरी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव के ही राजकीय प्राथमिक विद्यालय, खड़खोला में हुई। मेरे प्रेरणास्रोत मेरे पिताजी रहे हैं। वे इंटरमीडिएट कॉलेज घिंडवाड़ा में प्रधानाचार्य थे। मेरी माँ बीरा देवी एक गृहिणी थीं और हमेशा पढ़ाई के लिए प्रेरित करती रहती थीं। मैंने अपने विद्यार्थी जीवन में स्वयं ही पढ़ाई की, कभी-कभार भाई भी मदद करते थे। कक्षा 6 से 12 तक मेरी शिक्षा घिंडवाड़ा में मेरे पिताजी के निर्देशन में हुई। स्नातक एवं स्नातकोत्तर की पढ़ाई पौड़ी डिग्री कॉलेज से हुई। बीटीसी करने के बाद मेरी प्राथमिक विद्यालय, बिरसनी कोट में सहायक अध्यापिका के पद पर नियुक्ति हुई।

**मीमांशा : आप कई वर्षों से शिक्षक के तौर पर अध्यापन कार्य कर रही हैं। शिक्षक के रूप में कैसा महसूस करती हैं ?**

इंदु : मुझे अपने शिक्षण कार्य से बहुत प्रेम है। शिक्षिका होने पर मैं गर्व करती हूँ। इस पेशे में बच्चों के प्रति दायित्व व आनन्द की मिलीजुली अनुभूति होती है। मैं कहीं भी रहूँ, मेरी प्राथमिकताओं में मेरा विद्यालय और ख़्यालों में बच्चे आते रहते हैं। लगातार सोचती हूँ किस बच्चे के साथ क्या नया करूँ ताकि हर बच्चा सीखने के निर्धारित स्तर को प्राप्त कर पाए। प्रत्येक बच्चे के अभिभावकों से भी बराबर सम्पर्क बनाए रखती हूँ और सच तो ये है कि उनके द्वारा मिलने वाला आदर व प्रेम मुझमें कार्य करने के लिए ऊर्जा का संचार करता है।

**मीमांशा : आपने बातचीत में बताया कि आपको बचपन से ही पढ़ने-लिखने का शौक़ हैं, और निरन्तर पढ़ती-लिखती रहती हैं। किस प्रकार की**

**पुस्तकें / सामग्री पढ़ना पसन्द करती हैं और स्वयं के पढ़ने के लिए समय कैसे निकाल पाती हैं?**

**इंदु** : यदि हम अपने मन में किसी कार्य को करने की ठान लें तो वह हमारा जुनून बन जाता है, और इसके लिए फिर समय निकालने जैसी बात नहीं रह जाती। जब भी अकेली रहती हूँ, पुस्तकें मेरे साथ होती हैं। अकसर विद्यालय से आने के बाद अपने पढ़ने के लिए समय निकालती हूँ। शुरुआत में जब मैंने पढ़ना शुरू किया तो पारिवारिक और शासकीय व्यस्तताओं के चलते घर-परिवार से कुछ दिक़्क़तें आईं, किन्तु कुछ समय के बाद सभी दिक़्क़तें ठीक हो गईं। अब घर के सदस्य भी मेरी पढ़ाई के रुटीन को समझ गए हैं और मेरी पढ़ने की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करते हैं। किताबें हमें जीवनभर सिखाती रहती हैं, यह बात मैं अपने घर एवं विद्यालय के बच्चों को भी बताती हूँ। हमें बच्चों को ही नहीं सिखाना अपितु स्वयं भी सीखना है, और विचारों एवं अभिव्यक्तियों को पुख़्ता करना है। इन सभी बातों का ध्यान रखते हुए मैं पढ़ने-लिखने का प्रयास करती हूँ। मुझे ऐसी कहानियाँ व लेख पढ़ना पसन्द हैं जो बच्चों और स्कूल से सम्बन्धित हों। जैसे— गिजू भाई बधेका की पुस्तकें, *बच्चे की भाषा और अध्यापक, तोत्तोचान,* आदि।

**मीमांशा : एक शिक्षक के पेशे के लिए पढ़ना-लिखना क्यों व कितना ज़रूरी है? यह शिक्षण में कैसे मदद करता है?**

**इंदु** : जैसे कि मैंने बताया, मेरा निरन्तर प्रयास रहता है कि मैं कुछ नया पढ़ूँ जिससे मेरे शिक्षण में मदद मिल पाए और बच्चों के सीखने का स्तर और बेहतर हो सके। कई बार हमारे विचार स्थिर हो जाते हैं, मन में बात आती है कि यह काम नहीं हो सकता किन्तु जब हम पुस्तकें पढ़ते हैं तो हमारे विचारों की स्थिरता टूटती है। विचारों को आगे ले जाने, उनमें सन्तुलन बनाने में पुस्तकें हमारी मदद करती हैं। एक शिक्षक को पढ़ना-लिखना इसलिए भी ज़रूरी है क्योंकि बच्चे कई बार ऐसे सवाल पूछते हैं जिनका जवाब हमारे पास नहीं होता। बच्चों की विभिन्न अपेक्षाओं, सवालों को पूरा करने के लिए एक शिक्षक को पढ़ते-लिखते रहने की आवश्यकता होती है, और शिक्षा एक ऐसा विषय है जिसमें निरन्तर परिवर्तन होता रहता है। उस सकारात्मक परिवर्तन को समझने, स्वीकारने एवं बच्चों के साथ बेहतर शिक्षण प्रक्रिया किस प्रकार से की जाए, आदि के लिए भी पढ़ना आवश्यक है। एक उदाहरण के रूप में इसे बताना चाहूँगी कि पढ़ना-लिखना शिक्षण में कैसे मदद करता है— पहले मैं स्वयं पढ़ती थी उसके बाद लगा कि यह पढ़ना-लिखना बच्चों तक भी जाना चाहिए। इसके बाद मैंने रीडिंग कॉर्नर में 'किताबें जो हमने पढ़ीं' नाम से बच्चों के साथ काम किया, जिसमें प्रत्येक बच्चा अपनी पढ़ी हुई कहानी हमें सुनाता और अन्य बच्चे कहानी सुनने के बाद उसपर सवाल-जवाब करते। फिर मैंने इन विचारों को विस्तार देने के लिए बच्चों के साथ डायरी लेखन पर कार्य किया जिसमें बच्चे अपने अनुभवों को डायरी में लिखते हैं। लगातार ऐसा करने से बच्चों में कहानियाँ सुनने और किताबें पढ़ने के प्रति रुझान देखने को मिला है।



**मीमांशा : अपने इस पढ़ने-लिखने के शौक़ को आप विद्यालय के बच्चों में कैसे देखना चाहती हैं?**

**इंदु** : जैसे मैं ख़ुद पढ़ने-लिखने का शौक़ रखती हूँ वैसे ही चाहती हूँ कि बच्चे भी पढ़ने-लिखने का शौक़ रखें, किन्तु शौक़ पैदा करने



के लिए सर्वप्रथम बच्चों में पुस्तकों के प्रति दिलचस्पी जगानी होगी। इसके लिए मैं बच्चों को स्वतंत्र छोड़ देती हूँ ताकि वह पुस्तक के अन्दर देखने की कोशिश करें, फिर उन्हें बाल साहित्य की कहानियाँ या कविताएँ सुनाती हूँ। मैं कोशिश करती हूँ बच्चों को नई-नई अच्छी किताबें पढ़ने को दूँ जिससे उनमें पढ़ने के प्रति रुचि पैदा हो। जिन बच्चों को अभी पढ़ना नहीं आता उनको चित्र कहानी की किताबें देती हूँ वह चित्र देखकर मौखिक रूप से कहानी बताते हैं। इससे बच्चे की अभिव्यक्ति का विकास हो रहा है। धीरे-धीरे जब उनको अक्षरों व शब्दों की तरफ़ लेकर जाएँगे तो उनको लिखने-पढ़ने में आसानी होगी। इस प्रयास से मेरे सभी बच्चे रीडिंग कॉर्नर में तरह-तरह की पुस्तकें पढ़ते हैं, कुछ अपने घर ले जाते हैं। लिखने के लिए अपने अनुभवों को डायरी में दर्ज करते हैं। डायरी देखकर बच्चे लिखने की तरफ़ प्रोत्साहित हुए। मैंने डायरी छपवाकर उसमें बच्चों की फ़ोटो लगाईं, जिसे बच्चे बार-बार देखते हैं।

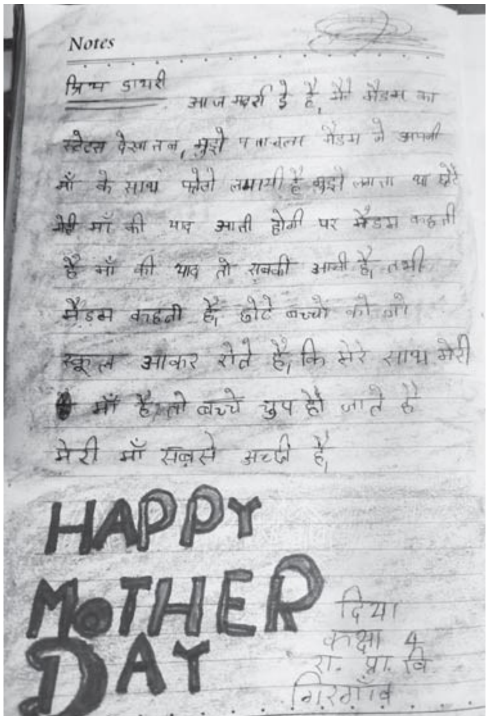
**मीमांशा : विद्यालय की प्रधानाध्यापिका होने के नाते आपके मुख्य दायित्व क्या हैं ? विद्यालय बेहतर तरीक़े से चले, इसके लिए क्या प्राथमिकताएँ देखती हैं ?**

**इंदु** : एक अकादमिक ज़िम्मेदारी है और दूसरी विभागीय सूचनाओं एवं डेटा से सम्बन्धित। कभी-कभी दोनों के बीच तालमेल बैठा पाना मुश्किल हो जाता है। विभागीय कार्य अधिकतर घर में ही करती हूँ। विद्यालय में मेरा पूरा फ़ोकस अकादमिक कार्य पर रहता है। यदि कोई सूचना बहुत ज़रूरी और तुरन्त माँगी गई हो, तो उसे उसी समय तैयार कर भेजना पड़ता है, इससे अकादमिक कार्य में बाधा उत्पन्न हो जाती है। मैं विद्यालय में कभी भी डाक बनाने का कार्य नहीं करती हूँ। विद्यालय के सभी कार्यों में मेरी साथी शिक्षिका मंजु रावतजी का बहुत सहयोग रहता है। विद्यालय बेहतर चले, बच्चे अपने स्तरानुसार सीखें, इसके लिए प्राथमिकता होती है कि मैं अकादमिक प्रक्रिया में अधिक-से-अधिक सम्मिलित रहूँ।

**मीमांशा : यह कैसे सुनिश्चित करती हैं कि विद्यालय की व्यवस्था / प्रक्रिया सुचारु रूप से चले ? जैसे— विद्यालय में अच्छी पढ़ाई-लिखाई, विद्यालय प्रक्रियाओं में समुदाय एवं सहयोगी अध्यापकों की भूमिका, विद्यालय विकास योजना, आदि।**

**इंदु** : शुरुआत में स्कूल के बेहतर संचालन के लिए मेरे द्वारा योजना बनाई जाती है। इसे बनाने के बाद मैं साथी शिक्षिका से उसे साझा करती हूँ। उनके इनपुट आने के बाद योजना में ज़रूरत अनुसार परिवर्तन कर उसे लागू किया जाता है। जैसे— बच्चों के स्तरानुसार समूह बनाना, अभी वर्तमान में बच्चों के साथ किस स्तर पर कार्य करने की ज़रूरत है, किस कार्य पर अधिक फ़ोकस करें ताकि बच्चे बेहतर सीखें और हम समय पर पाठ्यक्रम पूरा कर पाएँ। केवल पाठ्यक्रम पूरा करना हमारा उद्देश्य नहीं होता, इसमें मुख्य मक़सद रहता है कि बच्चे सीखने के प्रतिफल प्राप्त कर सकें।

रही समुदाय की भूमिका, तो उनके साथ निरन्तर बैठकें होती रहती हैं, बराबर सम्पर्क में रहा जाता है। विद्यालय जाने का रास्ता गाँव के बीच से होने के कारण बच्चों के अभिभावकों से




बातचीत हो जाती है। यदि कोई बच्चा विद्यालय नहीं आता है तो उनके घर फ़ोन से सम्पर्क किया जाता है, कभी-कभी बच्चों को लेने उनके घर भी जाते हैं। मैंने इससे पहले अपनी बातचीत में नहीं बताया कि मैं जहाँ से विद्यालय जाती हूँ वहाँ से घुमन्तू परिवार के 8 बच्चों को साथ लेकर जाती हूँ। यह मेरी दिनचर्या है, रोज़ उनके अभिभावकों के साथ सम्पर्क में रहती हूँ। विद्यालय संचालन की इस पूरी प्रक्रिया में सहयोगी शिक्षिका का मुझे निरन्तर सहयोग मिला है। हम मिलकर सभी कार्य कर पाते हैं। हाँ, इन सभी कामों में मुश्किलें तो आती हैं, उसके लिए भी मिलकर रास्ते निकालते हैं। कई बार कुछ मुश्किलें हल नहीं भी होती हैं।

**मीमांशा : पिछले कुछ सालों में आपके द्वारा किए गए कुछ नए व महत्त्वपूर्ण प्रयासों के बारे में बताइए ?**

इंदु : पहले मैंने स्वयं के विचारों को लिखना शुरू किया। फिर बच्चों के साथ भी इसका प्रयोग किया जिसमें मैंने विद्यालय में 'डायरी बोलती है' कार्यक्रम की शुरुआत और प्रभावी संचालन किया। आज बच्चे डायरी लिखते हैं, अपने विचारों एवं अनुभवों को दर्ज करते हैं। इसके साथ ही बच्चों के लिए पोडियम का निर्माण किया। पोडियम का इस्तेमाल करके बोलने में बच्चे आनन्द का अनुभव करते हैं। बच्चों के लिए बास्केटबॉल खेलने की सुविधा मुहैया कराई, इसमें वे बहुत ही आनन्द ले रहे हैं। घुमन्तू परिवारों के 8 बच्चों का अपने विद्यालय में नामांकन और विद्यालय तक उनके आवागमन के ख़र्च का वहन। उनके लिए आवश्यकतानुसार कपड़े, अन्न, आदि की व्यवस्था की गई। समुदाय के योगदान से संसाधनों की व्यवस्था की पहल की गई। चुनौतियों के बावजूद काफ़ी हद तक सफल भी हो पाई हूँ। सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं में टीएलएम को तरजीह दी। टीएलएम के अधिक उपयोग से बच्चों की पढ़ने में रुचि बढ़ने लगी है। शिक्षण में 'बाल शोध शिक्षण विधि' के प्रयोग को बढ़ाया, जो अधिक समय की माँग करती है। इन सभी प्रक्रियाओं से मेरे बच्चों के सीखने के स्तर में सकारात्मक बदलाव आया है। बदलाव की एक वजह यह भी दिखती है कि कोविड काल के चलते मेरा बच्चों के अभिभावकों से अधिक मिलना-जुलना हुआ, जिससे उनके सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक सन्दर्भ भी समझ में आए और मुझे अपनी ज़िम्मेदारी का अहसास और अधिक दृढ़ता से हुआ।

**मीमांशा : इस साल आप पढ़ने-पढ़ाने में और क्या नए प्रयास करने का सोच रही हैं ?**

इंदु : इस साल मुख्यतः विद्यालय स्तर पर बाल सेमिनार के आयोजन की योजना बनाई है। उम्मीद है कि आसपास के विद्यालयों के बच्चे भी इसमें प्रतिभाग करेंगे। कोविड काल के दौरान बच्चों की पढ़ाई में हुए नुक़सान को पूरा करने के लिए योजनाएँ 'विद्या सेतु' के आधार पर तैयार की गईं, यानी विषयवार शिक्षक मार्गदर्शिकाओं के अनुसार पठन-पाठन करना। यह सुनिश्चित करना कि हर बच्चा अपनी वर्तमान कक्षा के अनुसार अपेक्षित अधिगम

दक्षताओं को प्राप्त करे। शिक्षण प्रक्रियाओं में स्वयं एवं बच्चों के द्वारा निर्मित शिक्षण अधिगम सामग्री का उपयोग करना। नियमित शिक्षण के साथ-साथ कुछ सहगामी क्रियाओं को सीखना, जैसे– फ़ोटोग्राफ़ी, कम्प्यूटर की जानकारी, बाल डायरी का विस्तारीकरण, लर्निंग कार्नर का बेहतर उपयोग, आदि।

**मीमांशा : बच्चों के साथ बतौर शिक्षक आप कैसे जुड़ी हैं ?**

**इंदु** : मुझे लगता है कि यह कोई अलग से की जाने वाली बात नहीं है। ये एक शिक्षक के तौर पर हमारे अन्दर रची-बसी होनी चाहिए। बच्चों के साथ जुड़ाव बनाने के लिए किसी प्रक्रिया की ज़रूरत नहीं, बल्कि ये कुछ प्रक्रियाओं का परिणाम है। हम बच्चों के साथ जब भी बात करें तो संवेदनशील हों, और उनकी ज़रूरतों व मुश्किलों को समझें। बच्चों की इच्छाओं और भावनाओं का आदर करना एक महत्त्वपूर्ण बात है। शिक्षण के दौरान अकसर देखती हूँ, बहुत बार होता है कि मैं गणित पर बच्चों के साथ काम करना चाहती हूँ, लेकिन बच्चे कहते हैं आज हमको कहानी पढ़नी है। मैं ऐसे में अपनी इच्छाओं को उनके ऊपर बिलकुल भी प्रभावी नहीं होने देती और जैसी उनकी इच्छा होती है उसी अनुसार शिक्षण करती हूँ। कभी बच्चे कहते हैं कि हमको किसी ख़ास खेल को खेलना है तो उनकी इच्छाओं का ख़्याल रखते हैं। हाँ, यह बात बिलकुल नहीं कि हमेशा ही करना है और सभी इच्छाओं के लिए करना है। एक बात ये भी है कि मैं बच्चों के पारिवारिक सन्दर्भों को भी समझने का प्रयास करती हूँ ताकि उनके साथ भावनात्मक रूप से जुड़ पाऊँ।

**मीमांशा : आप बच्चों में लोकतांत्रिक मूल्यों को स्थापित करने के लिए क्या प्रयास करती हैं ?**

**इंदु** : मेरा निरन्तर प्रयास रहता है कि बच्चों को विद्यालय की सभी प्रक्रियाओं में शामिल करूँ और उन्हें भी स्कूली निर्णयों में भागीदारी करने का मौक़ा दूँ। स्कूल लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं के



लिए जगह बनें, इसके लिए मैं अपने विद्यालय में इन प्रक्रियाओं का आयोजन करती हूँ :

1. बच्चों द्वारा प्रार्थना सभा का आयोजन, जिसमें बच्चे ख़ुद निर्णय लेते हैं कि प्रार्थना सभा में क्या-क्या होगा और कौन करेगा।
2. रीडिंग कार्नर चलाने की ज़िम्मेदारी व इसका प्रबन्धन बच्चे आपस में मिलजुलकर करते हैं।
3. विद्यालय प्रांगण की देखरेख बच्चे ख़ुद तय करते हैं कि कौन किस भाग की देखरेख करेगा।
4. हर कार्य में बालक-बालिकाओं की बराबर भागीदारी।
5. बच्चों की आम बैठक में बच्चे मिलकर तय करते हैं कि स्कूल में क्या व्यवस्था और संसाधन होने चाहिए। जैसे– बच्चों ने फ़ोटोग्राफ़ी सीखने की इच्छा ज़ाहिर की और हमने उसपर काम किया।

**मीमांशा : अपने शिक्षण कार्य व स्कूल संचालन के दौरान आपको किस तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, और इनका समाधान कैसे करती हैं ?**

**इंदु** : सबसे बड़ी चुनौती तब होती है जब हम शिक्षण कार्य कर रहे हों और अचानक कोई विभागीय कार्य आ जाए जिसे तुरन्त करके

भेजना पड़ता है। उस समय यह हो जाता है कि हम बच्चों को देखें या विभागीय कार्य करें। कोई प्रशिक्षण आ जाता है तब समस्या होती है कि यदि 10 दिन के लिए अपने बच्चों को छोड़ती हूँ तो उनके सीखने के स्तर में अन्तर आएगा। इसके लिए हम स्वयं से ही समाधान निकालते हैं, जैसे– योजना के तौर पर उन्हें पाँच दिन के लिए कोई टास्क दे देना, या ट्रेनिंग के बाद वापस विद्यालय आने पर उनपर अतिरिक्त ध्यान और समय देना। सहयोगी अध्यापिका को बताती हूँ कि मैंने बच्चों को फलाँ प्रकार का टास्क दिया है, आप इनके टास्क को देखते रहना। इसके अलावा, जिन बच्चों को मैं अपने साथ (घुमन्तू परिवार) विद्यालय लेकर जाती हूँ, क्योंकि उन्होंने इसके पहले तक स्कूल नहीं देखा था और वह ऐसे वातावरण में नहीं रहे हैं, जहाँ अन्य बच्चों जैसा रोज़ नहाना, समय पर उठना, स्कूल के कपड़े पहनकर स्कूल आना, आदि होता है, इन सब प्रक्रियाओं में उन्हें ढालने के लिए उनके अभिभावकों को शिक्षा का महत्त्व बताना मेरे लिए शुरुआत में बहुत बड़ी और कठिन चुनौती थी। किन्तु धीरे-धीरे इसपर कार्य हो रहा है, बच्चे अब पढ़ने के लिए नहाकर और सफ़ाई के साथ निरन्तर विद्यालय आते हैं। शुरुआत में ये बच्चे विद्यालय में अपना समूह बना लेते थे और गाँव के बच्चे अलग, धीरे-धीरे इसपर भी काम किया। अब सब साथ में खेलते हैं और एक साथ कक्षा में बैठते हैं। राजस्थान से आए बच्चों के साथ रिश्ता बनाने के लिए मैं उनकी भाषा सीख रही हूँ, उनके अभिभावकों से कुछ-कुछ शब्द उनकी भाषा में बोलती हूँ ताकि निरन्तर सम्पर्क बना रह सके।

**मीमांशा** : आपकी नज़र में बेहतर शिक्षक कैसा होना चाहिए ?

**इंदु** : मुझे लगता है, बेहतर शिक्षक वह है जिसका बच्चों के साथ मानवीय रिश्ता हो और वह सबसे पहले बच्चों से जुड़े। जब तक हम बच्चों से मानवीय रिश्ते क़ायम नहीं करेंगे तब तक उनको कुछ भी नहीं सिखा सकते हैं। साथ



ही शिक्षक को विषय और उसे पढ़ाने की अच्छी जानकारी व समझ होनी चाहिए। इसके साथ ही प्राथमिक स्कूल के शिक्षक को धैर्यवान भी होना चाहिए। मुझे लगता है जिस शिक्षक में ये गुण हैं वह एक बेहतर शिक्षक है।

**मीमांशा** : किसी विषय या पाठ को पढ़ाने के लिए आप किस तरह की तैयारी करती हैं ?

**इंदु** : मेरा उद्‌देश्य रहता है कि किसी पाठ या विषयवस्तु को पढ़ाते समय बच्चों को अधिक-से-अधिक मूर्त चीज़ें या सामग्री दिखाकर शिक्षण कार्य करूँ, क्योंकि मैं सोचती हूँ कि वे कुछ करके सीखें, सीखने के दौरान ख़ूब सोचें व प्रश्न पूछें। कोई भी पाठ पढ़ाने से पहले उस पाठ को ध्यान से पढ़ती हूँ, मनन करती हूँ, और आवश्यक तैयारी करती हूँ। क्या-क्या टीएलएम की आवश्यकता मुझे पड़ेगी, इसको बनाने या जुटाने की कोशिश करती हूँ। साथ ही अधिक-से-अधिक बच्चों के सन्दर्भ और अनुभव कैसे उस पाठ को पढ़ाने में सम्मिलित हों, इसपर विशेष रूप से कार्य करती हूँ। और पढ़ाने के बाद सोचती हूँ कि मुझे अपने शिक्षण कार्य में कितनी सफलता मिली, बच्चे



कितना सीख पाए, और मेरे पढ़ाने में कहाँ व क्या कमी रह गई।

**मीमांशा :** जैसा कि आपने बताया, स्कूल में दो शिक्षिकाएँ हैं और काफ़ी बच्चे हैं। आप बच्चों को पढ़ाती भी हैं और स्कूल संचालन की ज़िम्मेदारी भी निभाती हैं, यह सब कैसे हो पाता है?

**इंदु :** साथी शिक्षिका के साथ बेहतर सम्बन्ध हैं और वह निरन्तर मुझे प्रोत्साहित व समय-समय पर सहयोग करती हैं। यदि कोई कार्य विभाग से सम्बन्धित आया और उन्होंने देख लिया तो वह स्वयं उस कार्य को कर लेती हैं। मुझे कभी भी बोलने की ज़रूरत महसूस नहीं होती। यह सहयोग ही बहुत बड़ी बात है। मुझे हमेशा प्रोत्साहित करते रहने के लिए भी अपनी सहयोगी शिक्षिका मंजु रावत का धन्यवाद करना चाहती हूँ। हमारा समुदाय भी काफ़ी अच्छा है, उससे कभी भी किसी तरह की शिकायत नहीं मिलती है। समुदाय के लोग समय-समय पर अपना सहयोग देते रहते हैं। इस तरह बच्चों के शिक्षण के साथ-साथ विद्यालय संचालन की ज़िम्मेदारी निभाई जाती है। शिक्षा का अधिकार सभी बच्चों को है, और यह अधिकार उन्हें मिलना चाहिए। इसके लिए यदि हम अपनी पेशेवर ज़िम्मेदारी से प्रयास करते हैं और इन प्रयासों से किसी बच्चे का वर्तमान और भविष्य सँवरता है तो एक शिक्षक के लिए इससे बड़ा उपहार कुछ नहीं हो सकता है।

**मीमांशा :** इंदुजी, इस बातचीत के लिए आपने समय निकाला इसके लिए आभार।

इंदु पंवार वर्तमान मे पौड़ी जनपद के राजकीय प्राथमिक विद्यालय गिरगांव में प्रधानाध्यापिका हैं। उन्होंने शुरुआती लगभग 7 वर्ष तक सहायक अध्यापिका के तौर पर प्राथमिक स्तर के सभी विषयों में शिक्षण किया है। वर्ष 2004 से प्रधानाध्यापिका पद पर नियुक्ति के उपरान्त भी आपने कक्षा शिक्षण को हमेशा ही अपने कार्य के केन्द्र में रखा है। वे हमेशा यह सोचती रहती हैं कि अपनी शिक्षण प्रक्रियाओं को और अधिक व्यवस्थित और प्रभावी कैसे बनाया जा सकता है। पत्र-पत्रिकाओं में शिक्षा और सामाजिक मुद्दों पर लेख लिखती रहती हैं।

सम्पर्क : indupanwar195@gmail.com

मीमांशा गोदियाल विगत 7 वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में कार्यरत हैं। वर्तमान में उत्तराखण्ड के पौड़ी ज़िले में काम कर रही हैं। हिन्दी विषय में कार्य करने के साथ-साथ अन्य विषयों को सीखने एवं समझने के प्रयासों में जुटी हैं।

सम्पर्क : meemansha.godiyal@azimpremjifoundation.org